सत्यमेव जयते

# स्वांगलो पट्टनो भाषा
# लाहौली (पट्टनी) भाषा प्रवेशिका
# LAHAULI (PATTANI) PRIMER

CIIL-NCERT Primer Series

# ई-पाठशाला

## क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें

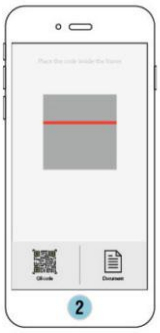

क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें

स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें

लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें

उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें– https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

# दीक्षा

**दीक्षा** एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें

अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी

पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें

क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें

कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें

क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

" जैसे हमारे जीवन को हमारी मां गढ़ती है, वैसे ही मातृभाषा भी हमारे जीवन को गढ़ती है। आजादी के 75 साल बाद भी कुछ लोग ऐसे मानसिक द्वन्द्व में जी रहे हैं, जिसके कारण उन्हें अपनी भाषा, अपने पहनावे, अपने खान-पान को लेकर एक संकोच होता है। जबकि विश्व में कहीं और ऐसा नहीं है। हमारी मातृभाषा है, हमें उसे गर्व के साथ बोलना चाहिए। और हमारा भारत तो भाषाओं के मामले में इतना समृद्ध है कि उसकी तुलना ही नहीं हो सकती। हमारी भाषाओं की सबसे बड़ी खूबसूरती यह है कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक, कच्छ से कोहिमा तक सैकड़ों भाषाएं, हजारों बोलियाँ एक दूसरे से अलग लेकिन एक दूसरे में रची-बसी हुई हैं। भाषा अनेक पर भाव एक। सदियों से हमारी भाषाएं एक दूसरे से सीखते हुए खुद को परिष्कृत करती रही हैं। एक दूसरे का विकास कर रही हैं।"

**श्री नरेंद्र मोदी**

माननीय प्रधानमंत्री, भारत

(27 फरवरी, 2022; मन की बात कार्यक्रम में)

# स्वांगलो पट्टनो भाषा

## लाहौली (पट्टनी) भाषा प्रवेशिका

## LAHAULI (PATTANI) PRIMER


**भारतीय भाषा संस्थान**
**Central Institute of Indian Languages**
**(Department of Higher Education, Ministry of Education, GoI)**
**Manasagangotri, Mysuru - 570 006**
**Ph: 0821 2515820 (Director)**
**email: ada-ciilmys@gov.in**

**राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्**
**National Council of Educational Research and Training**
**Sri Aurobindo Marg**
**New Delhi - 110016**
**Ph: 011 2696 2580**
**email: dceta.ncert@nic.in**

# स्वांगलो पट्टनो भाषा

## लाहौली (पट्टनी) भाषा प्रवेशिका

## LAHAULI (PATTANI) PRIMER

A basal reader of Lahauli (Pattani) Primer alphabet and basic numerals for the kids of Balvatika/Anganwadi levels and adult literacy programmes through andragogy, prepared by Central Institute of Indian Languages (CIIL), Mysuru and National Council of Educational Research and Training (NCERT), New Delhi.

*Editors*
Dinesh Prasad Saklani
Shailendra Mohan
Pawan Kumar
Pramod Kumar

*ISBN:* 978-81-977442-2-8

*First Edition:* December, 2024

*Published by* CIIL, Mysuru in collaboration with NCERT, New Delhi.

© CIIL & NCERT 2024
*All rights reserved.* No part of this primer may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted into any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying and recording or otherwise, without the prior permission of the publisher.

*Cover Design:* Saravanan A S
*Cover Photo:* Lahauli (Pattani) Resource Persons

*Printed by* CIIL, Mysuru and NCERT, New Delhi.

धर्मेन्द्र प्रधान
ଧର୍ମେନ୍ଦ୍ର ପ୍ରଧାନ
Dharmendra Pradhan

शिक्षा मंत्री
भारत सरकार
Minister of Education
Government of India

सत्यमेव जयते

आज़ादी का अमृत महोत्सव

# संदेश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को स्कूल और उच्चतर शिक्षा के प्रत्येक स्तर के साथ एकीकृत करने की आवश्यकता पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति की सिफारिशों के अनुरूप ही बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक की आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में शिक्षण कार्य को दृष्टिगत रखकर तैयार की गई है। अनेकानेक शोधों के माध्यम से भी यही निष्कर्ष निकाला गया है कि जब विद्यार्थियों को उनकी मातृभाषा/ घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में अनुदेशन दिया जाता है तब उनका शिक्षण-अधिगम अपेक्षाकृत उत्तम होता है। इसलिए भारत सरकार ने बाल वाटिका, आद्य साक्षरता तथा बुनियादी साक्षरता की शुरुआत की है। देश के विभिन्न भागों का दौरा करते हुए तथा वहाँ के शिक्षकों एवं बच्चों से बातचीत करते समय हमें इस बात का बोध हुआ कि भारत की विभिन्न भाषाओं तथा मातृभाषाओं में भाषा शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण पुस्तकों की तत्काल आवश्यकता है।

अतः हमने एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु को देश की सभी भाषाओं तथा मातृभाषाओं में ऐसी प्रवेशिकाओं का निर्माण करने हेतु उत्प्रेरित किया जो न केवल वैज्ञानिक विधि से अक्षर-पहचान के साथ पढ़ना और लिखना सीखने में मदद करें, बल्कि बच्चों को वहाँ के सांस्कृतिक पहलुओं का ज्ञान भी करवाएँ। अपनी भाषा तथा संस्कृति का ज्ञान आत्मनिर्भरता तथा विकास की ओर पहला कदम होता है।

ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के अनुसार स्थानीय सामग्री के उदाहरण प्रस्तुत करते हुए तैयार की गई हैं। इन प्रवेशिकाओं की मदद से बच्चे अपनी भाषाओं तथा मातृभाषाओं की ध्वनियों, वर्णों, शब्दों एवं वाक्य विन्यास के साथ-साथ संबंधित राज्य की राजभाषा तथा सभ्यता एवं संस्कृति का भी बुनियादी ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। इन पहलों के माध्यम से हमारे बच्चे भारतीय ज्ञान-परम्परा की समृद्ध विरासत से भी परिचित होंगे। डिजिटल प्रारूप में ये सभी प्रवेशिकाएँ बच्चों, शिक्षकों तथा अभिभावकों को पूर्णतः निःशुल्क रूप से भी उपलब्ध होंगी।

इस अवसर पर मैं समिति के सदस्यों, विशेषज्ञों और भाषा शिक्षकों को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इन प्रवेशिकाओं को तैयार करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ माननीय प्रधानमंत्री जी के 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अत्यधिक उपयोगी साबित होंगी।

(धर्मेन्द्र प्रधान)



MOE - Room No. 301, 'C' Wing, 3rd Floor, Shastri Bhavan, New Delhi-110 001, Phone : 91-11-23782387, Fax : 91-11-23382365
E-mail : minister.sm@gov.in

संजय कुमार, भा.प्र.से
सचिव

**Sanjay Kumar,** IAS
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
शिक्षा मंत्रालय
स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग
**Government of India**
**Ministry of Education**
**Department of School Education & Literacy**

# संदेश

मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति को आकार देने में भाषा महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करती है। भाषा एक समूह की विशेषताओं को परिभाषित करने के साथ-साथ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज्ञान संचार का माध्यम भी है। भाषा सभ्यता को आगे बढ़ाने और मनुष्य को अधिक उन्नत स्थिति तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के माध्यम से विज्ञान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के रूप में प्रसारित ज्ञान देश भर के सभी बच्चों तक पहुँचाया जा सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और बुनियादी स्तर की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2022, तीन वर्ष से आठ वर्ष तक के आयु-वर्ग के बच्चों के लिए मातृभाषा/घरेलू भाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा में सीखने-सिखाने पर बल देती है। भारतीय भाषाओं के प्रोत्साहन के उद्देश्य से एनसीईआरटी, नई दिल्ली तथा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के अथक् प्रयासों के परिणामस्वरूप भारतीय भाषाओं में सीखने सिखाने हेतु प्रवेशिकाओं का विमोचन किया जा रहा है। ये प्रवेशिकाएँ मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा को बढ़ावा देने और बच्चो में विभिन्न अवधारणाओं की समझ विकसित करने में सहायक होंगी। साथ ही राज्यों और शैक्षिक एजेंसियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकेगी। हमारे लिए इन प्रवेशिकाओं को शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षाविदों तथा अन्य हितधारकों तक पहुँचाना गर्व की बात है।

इस अवसर पर मैं प्रवेशिकाओं के निर्माण से जुड़े सभी सदस्यों, विशेषज्ञों एवं विभिन्न भाषायी शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके बहुमूल्य योगदान से इन प्रवेशिकाओं को विकसित करना संभव हो पाया है। मुझे विश्वास है कि इन प्रवेशिकाओं से विद्यार्थियों, शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, प्रशासकों, अभिभावकों, प्रधानाध्यापकों और शिक्षा के अन्य हितधारक लाभान्वित होंगे।

**(संजय कुमार)**

124 'सी' विंग, शास्त्री भवन, नई दिल्ली–110001
**124 'C' Wing, Shastri Bhawan, New Delhi-110001**
**Telephone: +91-11-23382587, +91-11-23381104 Fax : +91-11-23387589**
**E-mail: secy.sel@nic.in**

# प्राक्कथन

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम तो है ही, संस्कृति का एक उपादान भी है। भाषा समुदाय की पहचान होती है और पीढ़ियों के लिए ज्ञान के संचरण का स्रोत भी। भाषा सभ्यता के विकास को प्रेरित करती है और मानव को उच्चतर स्तर पर रूपांतरित भी करती है। यह तथ्य कि भारत एक बहुभाषिक देश है- एक ओर भारत की भाषिक विविधता एवं समृद्धि को दर्शाता है तो दूसरी ओर यह भी बताता है कि कैसे यह एक सामाजिक विविधता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी भारतीय सही अर्थों में द्विभाषिक या बहुभाषिक हैं। हम जानते हैं कि भारत की 2011 की जनगणना में 121 भाषाओं और 270 मातृभाषाओं/बोलियों की सूची दी गई है। भारत के संविधान के खंड XVII और 8वीं अनुसूची की 343 से 351 तक की धाराएँ देश की भाषाओं से संबंधित हैं। बच्चों का सामाजिक एवं संज्ञानात्मक विकास भाषा के द्वारा समृद्ध होता है, क्योंकि समाजीकरण का कार्य मातृभाषा अथवा परिवार एवं पड़ोस की भाषा में होता है। यह एक स्थापित तथ्य है कि बच्चों में भाषाओं को सीखने की जन्मजात क्षमता होती है। अतः राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2023 में विद्यालयी शिक्षा के प्रारंभिक दिनों (आधारभूत चरण) में शिक्षा हेतु माध्यम के रूप में मातृभाषा के उपयोग और मातृभाषा-आधारित शिक्षा पर अत्यधिक बल दिया गया है।

विद्यालयों में बच्चों की मातृभाषा की उपलब्धता को सुनिश्चित करना और यह देखना कि बच्चे किसी अपरिचित भाषा में शिक्षा-प्राप्ति के भय से मुक्त हों- यह किसी भी सफल शिक्षा-व्यवस्था के शाश्वत सिद्धांत हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भाषा खंड को 'बहुभाषिकता और भाषा की शक्ति' का शीर्षक दिया गया है जो बहुत ही सटीक है तथा यह विद्यालयी शिक्षा में सभी भाषाओं के विकास के महत्व पर बल देता है। भारत सरकार देशभर में मातृभाषा-आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए कटिबद्ध है और विभिन्न पहलों एवं परियोजनाओं के माध्यम से इसे लागू करने हेतु सतत प्रयास कर रही है। बच्चों की घर की भाषा में शिक्षा की यह सशक्त नींव न केवल भविष्य में विद्यालयी एवं उच्चतर शिक्षा को सबल बनाने में सहायक होगी बल्कि इसका एक उद्देश्य यह भी है कि बच्चे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए भी प्रेरित हों।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एनसीईआरटी) एवं भारतीय भाषा संस्थान (सीआईआईएल) द्वारा संयुक्त रूप से तैयार प्रवेशिकाओं (प्राइमर) का लक्ष्य छोटे बच्चों या भाषा सीखने वाले किसी अन्य व्यक्ति को मुद्रित एवं दृश्य माध्यम से भाषाओं से परिचित बनाना है। इन प्रवेशिकाओं का विकास विलुप्ति का खतरा झेल रही अनेक भाषाओं के दस्तावेजीकरण के प्रयासों में भी अपना योगदान दे रहा है। अतः भाषाओं का संरक्षण और विकास करना तथा सभी भाषाओं को विद्यालय में लाकर विद्यालयी शिक्षा, विशेषकर इसके निर्माणात्मक वर्षों को समावेशी बनाना प्रत्येक व्यक्ति का दायित्व है। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह भारतीय संविधान की समानाधिकारवादी लोकतंत्र की आत्मा के अनुरूप है और प्रत्येक समुदाय एवं व्यक्ति के भाषिक अधिकारों का सुदृढ़ीकरण है। मुझे विश्वास है कि ये प्रवेशिकाएँ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित बहुभाषिक शिक्षा की अवधारणा को प्रोत्साहन प्रदान करेंगी। साथ ही अनेक जनजातीय, अल्पसंख्यक एवं अल्पप्रयुक्त भाषाओं में अंतर्वस्तु के विकास का मार्ग भी प्रशस्त करेंगी तथा एनसीईआरटी द्वारा आधारभूत चरण हेतु विकसित अन्य सामग्रियों जैसे-बालवाटिका, विद्या प्रवेश आदि के लिए सहायक सामग्री का कार्य करेंगी।

शिक्षकों, अभिभावकों एवं बच्चों की शिक्षा के लिए कार्य करने वाले शिक्षाविदों के हाथों में इन प्रवेशिकाओं को देते हुए मैं माननीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी द्वारा उनके प्रेरणादायक मार्गदर्शन के लिए अनुगृहीत हूँ। मैं इन प्रवेशिकाओं के सफल विकास एवं प्रकाशन हेतु गठित समिति के कार्यकारी समूहों के अध्यक्षों, सदस्यों तथा समन्वयकों को भी धन्यवाद देता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, एनसीईआरटी एवं सीआईआईएल का यह संयुक्त प्रयास मातृभाषा आधारित बहुभाषी शिक्षा के उत्थान हेतु राज्यों एवं शिक्षा के अभिकरणों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगा और बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले एक राष्ट्रीय अभियान का रूप लेगा ताकि अपनी मातृभाषा का एवं अपनी मातृभाषा में अध्ययन करने के हर विद्यार्थी के अधिकार की रक्षा हो सके।

दिसंबर 2024
नई दिल्ली

प्रो. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली

# भूमिका/Introduction

भारत सदियों से एक बहुभाषिक देश रहा है जहाँ कई भाषाएँ/मातृभाषाएँ बोली जाती हैं। यह देश की एक महत्वपूर्ण विशेषता है कि हम अपने दैनिक व्यवहार में कई भाषाओं का प्रयोग करते हैं जो हमें एक साथ बांधती हैं और एकजुट रखती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 में इस बात पर अत्यधिक बल दिया गया है कि भारत की बहुभाषिक प्रकृति एक बहुत बड़ी संपत्ति है जिसका देश के सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और शैक्षणिक विकास के लिए कुशलतापूर्वक उपयोग करने की आवश्यकता है। यह शिक्षा में हर स्तर पर बहुभाषावाद को बढ़ावा देने की अनुशंसा करती है ताकि विद्यार्थियों को अपनी भाषाओं में अध्ययन करने का अवसर प्राप्त हो सके। सभी भारतीय भाषाओं में शिक्षण-अधिगम सामग्री के सृजन से इस बहुभाषिक संपदा में वृद्धि होगी और इससे विकसित भारत के निर्माण में  बेहतर योगदान हो सकेगा। एनईपी 2020 की अनुशंसाओं के अनुरूप, प्रारंभिक कक्षा की प्रवेशिकाओं के विकास के लिए एक व्यापक और समावेशी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जो भारत के प्रत्येक क्षेत्र की अनोखी भाषाई और सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप हो। इन प्रवेशिकाओं का उद्देश्य प्रारंभिक कक्षा के छात्रों को पढ़ने और लिखने में प्रवीणता प्रदान करना और उनकी रचनात्मकता और आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देना है। यह किसी भाषा के प्रतीकों और उसकी वर्णमाला के अक्षरों के बोध, अभिज्ञान एवं उच्चारण की कुंजी है। ये प्रवेशिकाएं बच्चों को इन अक्षरों के एक या एक से अधिक समुच्चयों के अर्थ से भी अवगत कराती हैं जो उनके संयोजनों जैसे, शब्द में उन अक्षरों की आरंभिक, माध्यमिक या अंतस्थ स्थिति से बनते हैं। इसके अतिरिक्त, ये  बाद में बताए गये अक्षरों के लेखन के अभ्यास को सुगम बनाने हेतु उदाहरण प्रस्तुत करते हैं और ये शिशुगीत/छंद/तुकांत बच्चों की भाषा तथा उनके संज्ञानात्मक कौशलों के विकास में भी सहायक सिद्ध होगी।

Bharat has been a multilingual country for ages, with many languages spoken in different regions of the country. Using multiple languages in our verbal repertoire is a common characteristic of the country; it binds us together and keeps us united. National Education Policy (NEP) 2020 strongly emphasises the idea, that the multilingual nature of Bharat is a huge asset that needs to be utilised efficiently for the socio-cultural, economic, and educational development of the nation. It recommends the promotion of multilingualism in education at every level so that learners get the opportunity to study in their own language(s). The creation of teaching-learning material in all Bharatiya languages will thus boost this multilingual asset and allow it to make a better contribution to 'Viksit Bharat'. That said, developing early-grade primers in alignment with NEP 2020 requires a comprehensive and inclusive approach that addresses the unique linguistic and cultural characteristics of each region in India. These primers aim to provide not only language proficiency in reading and writing but also foster creativity and critical thinking among the early-stage learners. It is a key to pronouncing, recognising, comprehending letters of the alphabet and symbols of a language. It also familiarises children with the meaning of one or more sets of these letters made through their combinations such as letters in initial, medial and final positions of the word. Moreover, it provides examples that facilitate writing practice of the letters introduced later; and the rhymes will help students in their language development and cognitive skills.

दिसंबर 2024
मैसूरु

प्रो. शैलेंद्र मोहन
निदेशक
भारतीय भाषा संस्थान, मैसूरु

## CIIL-NCERT Primer Series: Lahauli (Pattani) Primer Development Team

*Guidance*

Dinesh Prasad Saklani, Director, NCERT, New Delhi
Shailendra Mohan, Director, CIIL, Mysuru
Chamu Krishna Shastry, Chairman, Bharatiya Bhasha Samiti (BBS), New Delhi

*Advisors*

Amarendra Prasad Behera, Joint Director, Central Institute of Educational Technology (CIET), NCERT, New Delhi
Ramanujam Meganathan, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Awadesh Kumar Mishra, Chief Coordinator (Academic), BBS, New Delhi
Sandhya Singh, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Mohd. Faruq Ansari, Professor, Department of Education in Languages, NCERT, New Delhi
Pankaj Dwivedi, Assistant Director (Admin) i/c, CIIL, Mysuru
Ravindra Kumar, Associate Professor, CIET, NCERT, New Delhi

*Coordinator*

Pawan Kumar, Lecturer in Punjabi, Northern Regional Language Centre, Patiala

*Editorial Coordinator*

Aleendra Brahma, Lecturer-cum-Junior Research Officer, CIIL, Mysuru

*Resource Persons*

Sh. Pramod Kumar, Village Tandi, District Lahaul and Spiti, Himachal Pradesh
Sh. Mukesh, Village Sumnam, P.O. Tandi, District Lahaul and Spiti, Himachal Pradesh
Sh. Ravi, Village Raaling, P.O. Gondhla, District Lahaul and Spiti, Himachal Pradesh

*Reviewer*

Sangeeta Devi, Village Sumnam, P.O. Tandi, District Lahaul and Spiti, Himachal Pradesh

*Design Team*

Nandakumar L, JRP (Technical), National Translation Mission, CIIL, Mysuru
Jewsnrang Basumatary, Resource Person (Teaching) in Bodo, North Eastern Regional Language Centre, (CIIL), Guwahati
Saravanan A S, Graphic Editor, Scheme for Protection and Preservation of Endangered Languages (SPPEL), CIIL, Mysuru
Shwetha K, Artist, Bharatavani, CIIL, Mysuru
Shobharani B, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru
G. Yuvaraj, Data Input Operator, SPPEL, CIIL, Mysuru

*We sincerely acknowledge the copyright holders of the pictures used in this primer anonymously and we also declare that the pictures are used for purely educational purposes only.*

# कैसे पढ़ानी है भाषा प्रवेशिका लाहुली (पट्टनी)

लाहुल और स्पीति हिमाचल प्रदेश राज्य में स्थित एक बेहद खूबसूरत स्थान है। यह मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित है। भागा नदी की घाटी में स्थित लाहुल अपने सुरम्य परिदृश्यों, ट्रैकिंग ट्रेलस और बौद्ध धर्म के प्राचीन मठों के लिए जाना जाता है। वहीं दूसरी और, स्पीति एक ठंडा रेगिस्तानी क्षेत्र है जो स्पीति नदी के किनारे बसा हुआ है जो ताबो, धाँकर और कीय जैसे प्राचीन बौद्ध मठों के लिए जाना जाता है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार लाहुल और स्पीति की जनसंख्या 31,564 है। भाषावैज्ञानिक दृष्टि से लाहुल के भाषाई परिदृश्य पर चीनी-तिब्बती भाषा का वर्चस्व रहा है। लाहुल में मुख्य रूप से मनचद/पट्टनी, तिनानी, गाहरी, भोटि, चिनाली और लोहारी भाषाएं बोली जाती हैं और इन सभी को लाहुली के अंतर्गत रखा जाता है। यह प्रवेशिका लाहुल की पट्टन घाटी के प्रारंभिक स्कूली शिक्षा चरण के शिक्षार्थियों के लिए लाहुली की वर्ण-माला के व्यावहारिक ज्ञान की मार्गदर्शिका है। यह शिक्षार्थियों, शिक्षकों या किसी भी व्यक्ति के स्वतंत्र अध्ययन के लिए उपयुक्त इसकी प्रमुख विशेषताओं में शामिल हैं। इस प्रवेशिका में लाहुली ध्वनियों को देवनागरी लिपि में दर्शाया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 के अंतर्गत तीन से आठ साल तक के बच्चों को उनकी मातृभाषा / घरेलू भाषा /स्थानीय भाषा / क्षेत्रीय भाषा में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। भारत के ग्रामीण इलाकों में बच्चे कक्षा की शिक्षा-दान प्रणाली को ठीक से समझ नहीं पाते हैं। यह बात विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित करती है। इसीलिए केंद्र सरकार ने तीन से आठ वर्ष तक के बच्चों को बाल वाटिका एवं प्रथम तथा द्वितीय कक्षा के बच्चों को आद्यप्राथमिक स्तर पर मौलिक साक्षरता प्रदान करने की व्यवस्था की है। इसमें स्थानीय गीतों एवं कविताओं के माध्यम से बच्चों की मौखिक भाषा के विकास पर बल दिया गया है। यह काम प्रवेशिकाओं में कविताओं तथा चित्रों के माध्यम से किया जा रहा है। इसके साथ ही बच्चों के ध्वनि परिचय, वर्ण परिचय एवं लेखन के अभ्यास के लिए भी भाषा प्रवेशिका का प्रयोग किया जा रहा है।

बाल वाटिका स्तर से तृतीय कक्षा तक बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाने से उनके बौद्धिक विकास के साथ-साथ उनकी सृजनशीलता एवं कल्पना शक्ति का विकास भी हो सकता है। बच्चे अपनी मातृभाषा में पढ़ना-लिखना सीखने के साथसाथ धीरे-धीरे हिंदी भाषा में कैसे पढ़-लिख सकते हैं, इसकी सटीक पद्धति बुनियादी स्तर के राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा 2022 में विस्तृत रूप से बताई गई है। बच्चे पहले पढ़ना-लिखना सीखते हैं इसलिए हिंदी भाषा की वर्णमाला की पुस्तकों में बच्चों की मातृभाषा एवं विद्यालय की हिंदी भाषा की समस्त ध्वनियों, वर्णों एवं मात्राओं को स्थान दिया गया है। पुस्तकों में दिये गये शब्दों का संग्रह बच्चों की संस्कृति एवं परिवेश से किया गया है।

बहुभाषी शिक्षा का मूल उद्देश्य बच्चों को घर की भाषा से पढ़ाना-लिखाना शुरू कर के राज्य की भाषा में पढ़ने-लिखने की उनकी दक्षता को बढ़ाना है। लाहुली और हिंदी भाषा में प्रस्तुत यह प्रवेशिका हिमाचल प्रदेश राज्य के शिक्षकों एवं छात्रों के लिए है। मौलिक साक्षरता के चार प्रमुख चरण होते हैं। पहले चरण में कविताओं कथाओं एवं चित्रों के माध्यम से बच्चों का बौद्धिक विकास किया जाता है। उसके बाद भाषा शिक्षण के लिए बच्चों को वस्तुओं के साथ-साथ शब्दों से भी परिचित कराया जाता है और शब्दों में व्यवस्थित अक्षरों की पहचान कराई जाती है। इस पर्याय क्रम में बच्चे अलग-अलग अक्षरों को पहचाना सीखते हैं। इस प्रकार बच्चे ध्वनि एवं वर्ण के बीच के संपर्क को समझते हैं। भाषा प्रवेशिका को कैसे पढ़ना है, इसके मूल बिंदुओं को नीचे लिखा गया है-

**ध्वनि परिचय**: बच्चे चित्र देखकर उस वस्तु का नाम बताएँगे। शिक्षक पूछेंगे कि चित्र का नाम किस ध्वनि से शुरू होता है? जैसे लाहुली भाषा का शब्द 'अर्शी' और बच्चे चित्र को देखकर यह पहचानेंगे कि यह शब्द 'अ' की ध्वनि से शुरू होता है।

**वर्ण परिचय**: शिक्षक पहले बच्चों को बताएँगे कि 'अ' वर्ण कैसा दिखता है। फिर उनसे दिये गये कुछ शब्दों में 'अ' अक्षर या वर्ण को पहचानने के लिए कहेंगे। बच्चे तीन-चार शब्दों में से 'अ' अक्षर को पहचान कर उसकी ध्वनि का उच्चारण करेंगे और उसे लिखने का अभ्यास करेंगे।

**पढ़ना:** बच्चे चित्र देखकर अपनी भाषा में शब्द बोलेंगे। उस शब्द पर उंगली को चलाकर बच्चे लाहुली शब्द 'अर्शी' को पढ़ेंगे। इसी प्रकार के अन्य शब्दों को पढ़कर वे 'अ' वर्ण को पहचानेंगे और उसका उच्चारण करेंगे। बच्चे शिक्षकों को यह बताएँगे कि 'अ' अक्षर शब्द के आरंभ में आता है या बीच में या अंत में।

शिक्षक बोर्ड पर 'अर्शी' के अलावा तीन-चार अन्य शब्द भी लिखेंगे। फिर बच्चों को एक-एक करके बुलाएँगे और उनसे शब्दों को पढ़ने एवं वर्णों को पहचानने के लिए कहेंगे। चूँकि ये सारे शब्द बच्चों के जाने-पहचाने परिवेश से लिए जाते हैं, अतः वे प्रवेशिका में चित्रों को देखकर शब्दों को पहचान पाएँगे और उन्हें सहजता से बोल पाएँगे। शिक्षक कोई एक शब्द लिखेंगे और उसके प्रत्येक वर्ण को अलग-अलग पढ़ने के लिए बच्चों से कहेंगे। फिर वर्णों को जोड़कर उन शब्दों को पढ़ने के लिए कहेंगे। इससे बच्चों का वर्ण परिचय, शब्द परिचय एवं ध्वनि परिचय हो जाएगा। एक बच्चे द्वारा शब्द को पढ़ने के समय अन्य बच्चे उसके साथ मिलकर उस शब्द को दुहराएँगे। इसे 'सामूहिक पठन कहते हैं।

**लेखनः** शिक्षक बच्चों को पहले 'अर्शी' शब्द के 'अ' अक्षर को लिखना सिखाएँगे। इसके लिए कलम / पेंसिल को कैसे चलाया जाता है, यह भी सिखाएँगे। इसे 'सहायक लेखन' कहा जाता है। इसके बाद बच्चे प्रवेशिका में दिये गये खाली स्थान में 'अ' अक्षर को स्वयं लिखेंगे। इस पूरी प्रक्रिया में शिक्षक बच्चों की सहायता करेंगे।

बच्चों की मौखिक भाषा के विकास के लिए हर प्रविष्टि में एक-दो पंक्तियों की कविता दी गई है। इसको पढ़ कर एवं गाकर शिक्षक बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे। शिक्षक विद्यालय के पुस्तकालय में उपलब्ध बच्चों की कहानी की किताब से कहानियाँ सुनाकर बच्चों के साथ उस पर चर्चा करेंगे। वे प्रथम एवं द्वितीय कक्षा के बच्चों को उनकी मातृभाषा में कहानियाँ एवं गीत सुनाएँगे।

इस प्रवेशिका में जितने शब्द दिए गये हैं वे साक्षरता का नमूना मात्र हैं। लेकिन बच्चे अपनी भाषा के सैकड़ों शब्दों को जानते हैं। इसलिए एक वर्ण वाला शब्द पूछने से वे अनेक शब्द सुना सकते हैं। जैसे, शिक्षक यह पूछेंगे कि 'अ' से शुरू होने वाले कुछ शब्द सुनाओ तो बच्चे 'अम', 'अडू', 'अतेग' आदि शब्दों को बता सकते हैं।

निम्नलिखित पंक्तियों को देखो और खाली स्थानों में उसी तरह की रेखाएं बनाओं :

खड़ी रेखा :

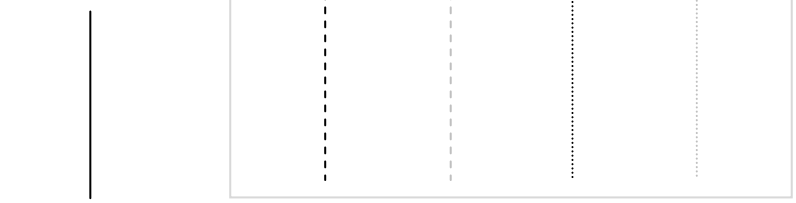

क्षैतिज रेखा :

तिरछी रेखा 1 :

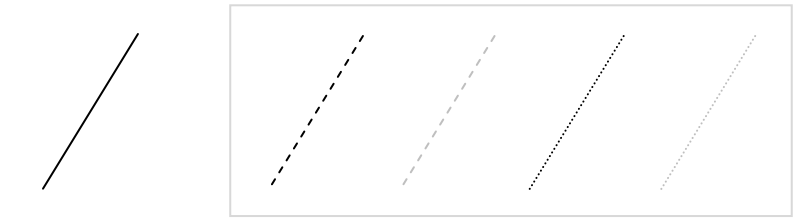

तिरछी रेखा 2 :

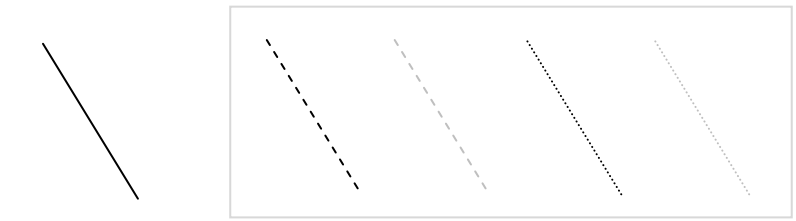

वक्राकर रेखा 1 :

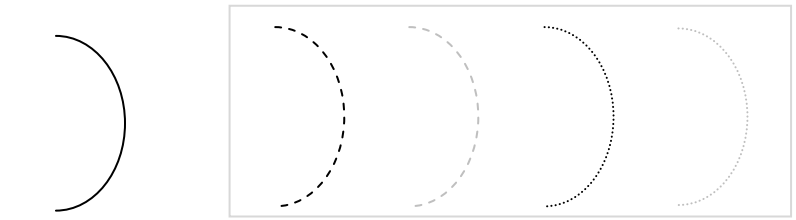

वक्राकर रेखा 2 :

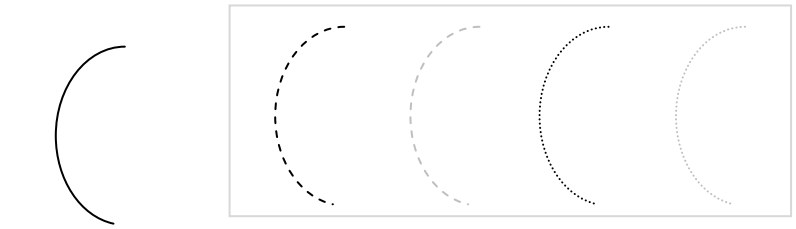

*नोट:* शिक्षक यह सिखाएँगे कि कलम / पेंसिल को कैसे पकड़ें और दिये गये स्थानो में रेखाएं कैसे खींचें।

# लाहुली वर्ण

## स्वर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ |
| ए | ऐ | ओ | औ | | | |

## व्यंजन

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण |
| त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म |
| य | र | ल | व | श |
| ष | स | ह | त्र | ड़ |

# अ

अम

रास्ता

मुग अपी रंग भत्ते अम
बन्द शुचे इबि

अर्शी

दर्पण

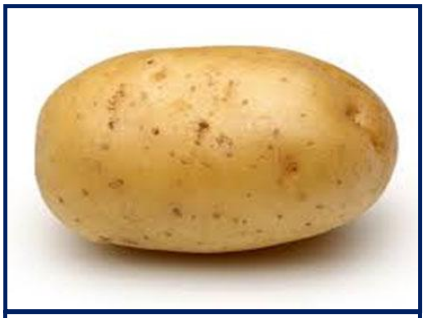

अड़ू

आलू

अतेग

ढक्कन

अ

अ

अ

# आ

आह

मुँह

मस आह चांगजी ला
रूठे मशुबी

फरुआ

फावड़ा

आ

आ

आ

आ

आ

आ

# इ

# इच्चा

एक

हेन्दु भततेतु सदमा
इच्चा शुबी

1

इल

बाज

कोइच

पिल्ला

पोइ

अगरबत्ती

इ इ इ

# ई

ईट

ईंट

घरबार बनाचि रिंग
ईट कम अपी

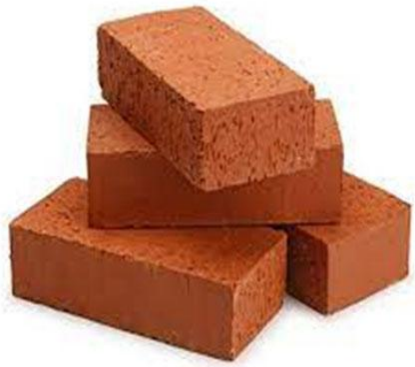

त्रेईं

भेड़

शेई

लाल

लेई

पीला

ई ई ई

# उ

## उड्रा

फूल

बौड़ू उड्रो झोलणू
रूठे रूठे बानिकपी

उम

कमर

कटु

बच्चा

लबुग

शलगम की एक प्रजाति

उ उ उ

# ऊ

## ऊटठी

घड़ा

स्वांगलंग तुई तुई
ब्याह रिंग ऊटठी रंड्री लेपी

ट्रऊ

केतली

ऊ ऊ

ऊ

ऊ ऊ ऊ

# ऋ

ऋ

हिमस्खलन

गुन मुग अन्तर ऋ
अपमी बेद शुबी

ऋन्जाटू

मकड़ी

ऋग

बालों की जूँए

ऋह

सफेद नेवला

ऋ ऋ ऋ

# ए

एके

सूरज

करनम ऐके ट्रोडी
दखते बंग्जी

एम

खरपतवार

ए

ए

ए

ए

ए

ए

ए

# ऐ

## ऐची

बिजाई

शेल ऐची दंगजीमी
कम शुबी

| | | | |
|---|---|---|---|
| ऐ | ऐ | ऐ | |
| ऐ | ऐ | ऐ | |
| ऐ | ऐ | ऐ | |

# ओ

ओमो

भालू

ओमोरे गुन इमि
रिंग बंग्जी

ओमजा

साँप

ओ ओ

ओ

ओ ओ ओ

# औ

औशद

औषदि

लहारजेची औशद
रूठे रन्ड्री

औगठेन

कुदाल

औग

भूस्खलन

औ

औ औ औ

# क

कर

तारे

अतई ए कटुरे सर्गअंग
कर खाई

कल

खिड़की

लकशुब

दस्ताना

नगलिक

छिपकली

क क क

# ख

# खतग

## सम्मान पटका

स्वंगलांग खतग लेची
मासे आदर चैची

खुई

कुत्ता

खोग

पेट

पाख

पंख

ख ख ख

# ग

गो

पहाड़

रंगी रंगी गो तु बिचंग
हेदु स्वांगलो धरतिरी

गरी

नारियल

ग्वा

लोमड़ी

सर्ग

आसमान

ग ग ग

# घ

घट्ट

घराट

तुई तुई घट्टङ
छवाह युची इबी

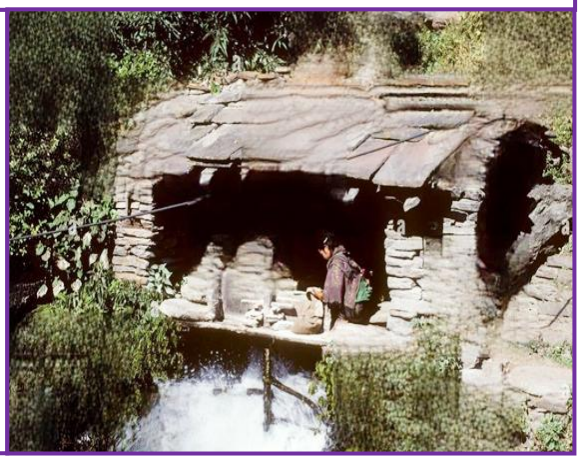

घन्डोली

जंगली सब्जी

घण

हथौड़ा

मुघ

बर्फ

घ घ घ

# ङ

## सङा

सीढ़ी

दिवरचंग घरबार रिंग सिंग ऊ
सङा माकेचतोर

रङ

घोड़ा

गङमी

आदमी

पितङ

दरवाजा

ङ ङ ङ

# च

लचङ

चाँद

पुर्णियों रिंग
लचङ पूरे हुच्ची

चरनी

गाल

लचम

बकरे के बाल

पयूचा

चूहा

च च च

# छ

छोपचा

चम्मच

छोपचा छती तुडमी
रिंग कम अपी

छा

नमक

चछग

छाननी

कड़छी

करछी

छ छ छ

# ज

जद

गेहूं

दिवरचंग जद ए बर्फो
मस माएचातोर

जङ

सोना

छोजम

लकड़ी का बर्तन

यङजा

मक्खी

ज ज ज

# झ

## झोलणू

टोपी का फूल

ब्याह रिंग झोलणू ए
टोपडू चंबे दोतिंग रड्री

झोली

झोला

झिलमिल

रौशनी

झ

झ

झ

झ

झ

# अ

## अरचा

मटर

स्वगलो अयरचा जेई
रिंग रूठे शुबी

| | | | |
|---|---|---|---|
| अ | अ | अ | |
| अ | अ | अ | |
| अ | अ | अ | |

# ट

# टिगलिक

अंडा

टिगलिग रोजे
जेई रूठे शुबि

टू

धुआँ

कैइटी

चाबी

ऋन्जाटू

मकड़ी

ट ट ट

ठ

ठुर्म

जड़ी बूटी

ठुर्म इच्चा जडी बूटी गासी

ठोलू

छोटी हथौड़ी

कण्ठी

गले का हार

लठी

लाठी

ठ ठ ठ

# ड

# तडका

झुमका

तडका चची उमरो मेचमी
तिङ मस छौपी

डोगला

कड़ाई

डू

बादल

बेन्डी

दरिया

ड ड ड

# ढ

ढाल

प्रणाम

कुस तिंग हेन्जी भतते
ची ढाल लजी

ढाप

पिंजरा

ढब्बा

पैसा

ढडू

बड़ी करछी

ढ ढ ढ

# ण

तूहूण

झूला

दिवरचंग तूहूणअरे
थोडे षुची तोतोर

पणा

लकड़ी की गठरी

मणि

मणि

बण

जंगल

ण ण ण

# त

# तकली

ऊन कातने का यंत्र

तकलिङ चम पञ्जी
योचि मशुबी

ती

पानी

कतर

चोलू

कीर्ति

किल्टा

त त त

# थ

## थपक

बड़ी सूई

थपक अड़ू तू बोरी रे
पेन्डी रिंग कम अपी

थर

बर्फानी तेंदुआ

बयोथरी

दुल्हन

पलथा

हथेली

थ थ थ

# द

दन

टँगरोल

दनदे दिवरचंग
बेसा तोतोर

दाँग

घास का मैदान

यङदे

वृद्ध

मोद

चेहरा

द द द

# ध

धरतिरी

पृथ्वी

स्वांगलो ता धरती
ओ देवता तू देशा शू

धारी

रेखा

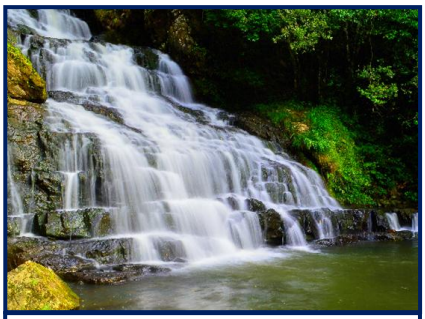

धारा

झरना

धन्दूरा

धतूरा

ध ध ध

# न

## नाड़

छोटा नाला

नाड़ संग शेल

बेसा ईबी

ननदे

बर्तन

कोनजा

पाँव

पन

उठाने वाली सीढ़ी

न न न

# प

पानू

दूध

ग्वाणो पानू कटूतिंग
रुठे शुबी

पनजी

ऊन कातना

पिपड़ी

मिर्च

रुस्पा

हड्डी

प प प

# फ

फरफिटिग

तितली

शेल अपिरङ रङबिरङी
सलठे सलठे फरफिटिग शुबी

फया

माथा

फैन्जा

टोकरी

फुकान

आटा

फ फ फ

# ब

ब्रेम्जा

उंगली

भत्ते मीची सा
ब्रेम्जा शुबी

बाङ

बैल

जराबा

जुराब

लब

पत्ता

ब ब ब

# भ

भिल्ल

बिल्ली

भिल्ले भत्ते पानू
तुडजा इलजा

भुतूतु

हुदहुद

भुत्पा

धौंकनी

भ

भ

भ

भ

भ

# म

# मे

आग

गुन मे मशुई सेत
तोङ सोई शुबी

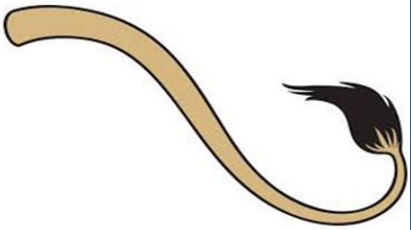

मेकुटु

पूंछ

गोम्पा

बौद्ध मठ

कुम

सिरहाना

म म म

# य

## यामा

शहद

यामा ग्युलदिंग
रूठे शुबी

यग

याक

यवद

गिद्ध

प्या

चिड़िया

य य य

# र

## रनजी

बुनाई

शाल रनजी योची
कम म शुबी

रग

पत्थर

करजी

कुल्हाड़ा

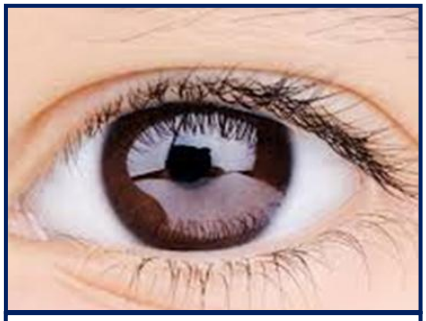

टीरा

आँख

र र र

# ल

## लरी

कनखजूरा

लरी बिल चटे ठारी
रिंग मस शुबि

लेह

जीभ

टेलङ

घास की ढेरी

मिगशल

ऐनक

ल ल ल

# व

## वलजा

बर्फ हटाने वाला बेलचा

वलजा मुग लेची
रिंग कम अपि

वन

भाप

छवाह

दांत

ग्वा

लोमड़ी

व व व

# श

## शागुण

स्वागत

कुसतु दोथर भतते
मीरेतिंग शागुण लजी

शिर

रेत

लकशुब

दस्ताना

पोश

गलीचा

श श श

# ष

ष

सेब

इच्चा सुशी षे जी उई
षे ला सूपी लजी

13

पिषोटी

खाल की बोरी

साषुम

तेरह

पुष

घुटना

ष ष ष

# स

## सन्दाड़

बारिश

दिवरचंग स्वंगलंग ला
मस संदाड़ अपा

सुतणा

पाजामा

सोलतग

मेज़

खुर्सी

कुर्सी

स स स

# ह

हट्टी

दुकान

नगरो हट्टी रिङ मस
समानरे मशुबी

हल्दी

हल्दी

हड़

हल

हलडा

त्योहार

ह ह ह

# त्र

## त्रकड़ी

तराजू

अरचा चरची रिंग
त्रकडी कम अपी

त्रेईं

भेड़

त्रपड़ी

चमड़ी

त्रिया

तीन टांग वाला चूल्हा

त्र त्र त्र

# ड़

मूड़ी

मूली

मूड़ी केशी छती
रिंग स्वाद शुबी

टोबड़ू

टोपी

नड़ू

पाइप

मक्कड़

बंदर

ड़ ड़ ड़

| स्वर | मात्रा | उदाहरण | चित्र |
|---|---|---|---|
| अ | ◌ | कर | |
| आ | ◌ा | तड़का | |
| इ | ◌ि | पितङ | |
| ई | ◌ी | झोली | |
| उ | ◌ु | सुरमो | |

| स्वर | मात्रा | उदाहरण | चित्र |
|---|---|---|---|
| ऊ | ◌ू | ठोलू | |
| ऋ | ◌ृ | | |
| ए | ◌े | बेन्डी | |
| ऐ | ◌ै | फैन्जा | |
| ओ | ◌ो | डोगला | |

| स्वर | मात्रा | उदाहरण | चित्र |
| --- | --- | --- | --- |
| औ | ौ | तौली | |

| गिनती | | |
|---|---|---|
| 1 | इच्चा | |
| 2 | जूट | |
| 3 | शुमु | |
| 4 | पी | |
| 5 | ड़ा | |
| 6 | त्रुई | |
| 7 | निजि | |
| 8 | रे | |
| 9 | कू | |
| 10 | सा | |

| | | |
|---|---|---|
| 11 | सेइदी | 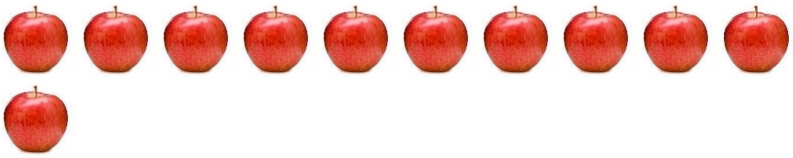 |
| 12 | संहि | 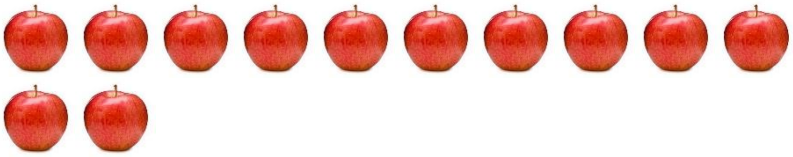 |
| 13 | साषुम | 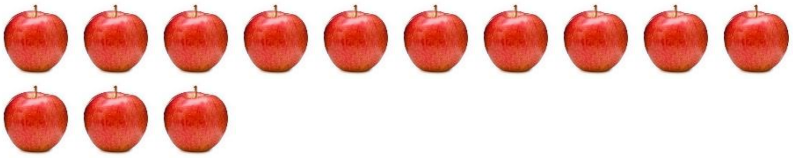 |
| 14 | सपी | 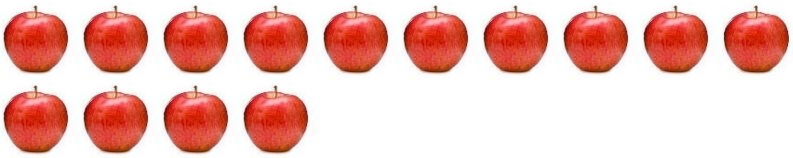 |
| 15 | सङा | 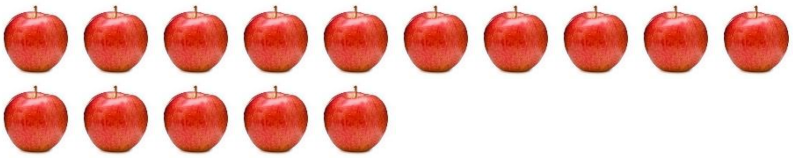 |
| 16 | सत्रुई | 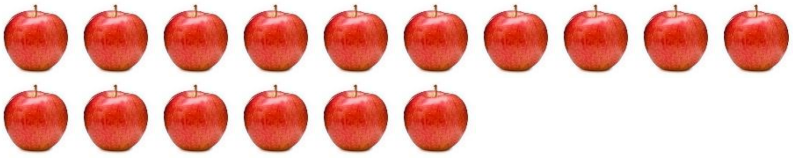 |
| 17 | सांही | 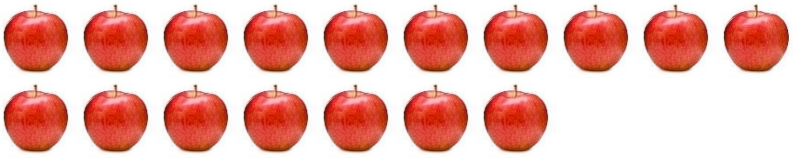 |
| 18 | सरे | 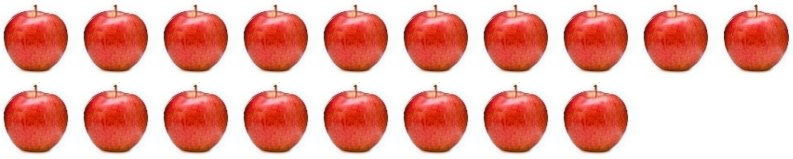 |
| 19 | सस्कू | 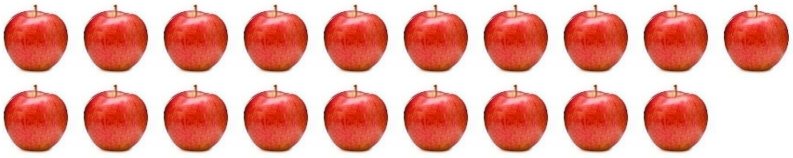 |
| 20 | निजा | 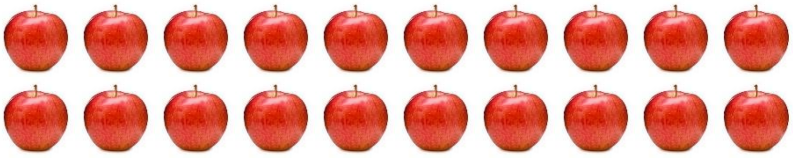 |

| गिनती लिखें | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 1 | 1 | 1 | |
| 2 | 2 | 2 | 2 | |
| 3 | 3 | 3 | 3 | |
| 4 | 4 | 4 | 4 | |
| 5 | 5 | 5 | 5 | |
| 6 | 6 | 6 | 6 | |
| 7 | 7 | 7 | 7 | |
| 8 | 8 | 8 | 8 | |
| 9 | 9 | 9 | 9 | |
| 10 | 10 | 10 | 10 | |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| 11 | 11 | 11 | 11 | |
| 12 | 12 | 12 | 12 | |
| 13 | 13 | 13 | 13 | |
| 14 | 14 | 14 | 14 | |
| 15 | 15 | 15 | 15 | |
| 16 | 16 | 16 | 16 | |
| 17 | 17 | 17 | 17 | |
| 18 | 18 | 18 | 18 | |
| 19 | 19 | 19 | 19 | |
| 20 | 20 | 20 | 20 | |

# हिंदी वर्णमाला

## स्वर

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | आ | इ | ई | उ | ऊ | ऋ |
| ए | ऐ | ओ | औ | अं | | |

## व्यंजन

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| क | ख | ग | घ | ङ |
| च | छ | ज | झ | ञ |
| ट | ठ | ड | ढ | ण |
| त | थ | द | ध | न |
| प | फ | ब | भ | म |
| य | र | ल | व | श |
| ष | स | ह | | |
| क्ष | त्र | ज्ञ | | |
| श्र | ड़ | ढ़ | | |

# ePathshala

## Step-by-Step guide for users to access e-resources linked to QR Codes

The coded box placed on the first page of every chapter is called quick Response (QR) Code. It will help you to access e-resources such as audios, videos, multi-media, texts, etc. related to themes given in the chapter. The first QR code is to access the complete e-textbook. The subsequent QR codes will help you access the relevant e-resources linked to each chapter. This will help you enhance your learning in a joyful manner.

Follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using ePathshala

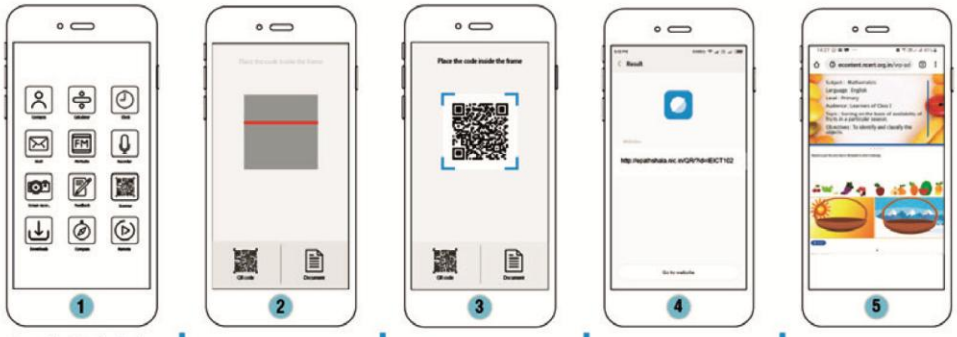

1. Install ePathshala Scanner app from Play Store and open
2. Get ready with QR code scanning window
3. Place scanner above the QR code
4. Select and click on the link
5. Use available e-Resource

**For accessing the e-Resources using e-Pathshala on desktop or laptop follow the step stated below:**

Go to https://epathshala.nic.in/topics.php and enter the alphanumeric code given below the QR code

# DIKSHA

**Download DIKSHA app from Google Playstore and follow the steps given below and access the e-Resources through your smartphone or tablet using DIKSHA**

1. **Select** preferred language
2. **Choose your role:** Student or Teacher
3. **Grant access** and allow app permissions
4. **Tap to scan** the QR code
5. **Focus camera** on the QR code in textbook
6. **Click to Play** QR code specific e-resource(s)

**For accessing the e-Resources using DIKSHA on desktop or laptop follow the step stated below:**

Go to https://diksha.gov.in/resources and enter the alphanumeric code given under the QR code

## PREPARATION OF BILINGUAL PRIMERS (EARLY GRADE) FOR BHARATIYA LANGUAGES JOINTLY BY CIIL & NCERT

### PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-I (54)

| SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | ANAL | 12 | HALABI (HALBI) | 23 | KONDA | 34 | MANIPURI | 45 | SANTALI (WEST BENGAL) |
| 2 | ANGAMI | 13 | HMAR | 24 | KORKU | 35 | MAO | 46 | SAVARA (SORA) |
| 3 | AO | 14 | JATAPU (KUVI) | 25 | KOYA | 36 | MISHMI | 47 | SHERPA |
| 4 | ASSAMESE | 15 | JUANG | 26 | KUI | 37 | MISING | 48 | SÜMI (SEMA) |
| 5 | BHUTIA | 16 | KABUI (RONGMEI) | 27 | KUKI | 38 | MIZO | 49 | TAMANG |
| 6 | BODO | 17 | KARBI | 28 | KURUKH/ORAON | 39 | MOGH | 50 | TANGKHUL |
| 7 | DEORI | 18 | KHANDESHI | 29 | KUWI | 40 | MUNDARI | 51 | TANGSA |
| 8 | DESIA | 19 | KHARIA | 30 | KUZHALE (KHEZHA) | 41 | NEPALI | 52 | TIWA (LALUNG) |
| 9 | DIMASA | 20 | KINNAURI | 31 | LIANGMAI | 42 | NYISHI (NISSI) | 53 | TULU |
| 10 | GADABA (GUTOB) | 21 | KISAN (KUNHU) | 32 | LIMBU | 43 | RAI | 54 | WANCHO |
| 11 | GARO | 22 | KODAVA (COORGI/KODAGU) | 33 | LOTHA | 44 | SANTALI (ODISHA) | | |

### PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-II (25)

| SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 55 | ADI | 60 | HO | 65 | KOM | 70 | MARAM | 75 | RENGMA |
| 56 | BHUMIJ | 61 | KHIAMNIUNGAN | 66 | KONYAK | 71 | NOCTE | 76 | SHINA |
| 57 | CHANG | 62 | KOCH | 67 | LADAKHI | 72 | PASHTO | 77 | TAMIL |
| 58 | GONDI | 63 | KODA (KORA) | 68 | LEPCHA | 73 | POCHURY | 78 | TIBETAN |
| 59 | HALAM | 64 | KOLAMI | 69 | MARA (LAKHER) | 74 | RABHA | 79 | YIMKHIUNG (YIMCHUNGRE) |

### PRIMERS DEVELOPED IN PHASE-III (25)

| SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 80 | BENGALI | 85 | GUJARATI | 90 | KORWA | 95 | MARATHI | 100 | ODIA |
| 81 | BHILI | 86 | KANDHA (KONDH) | 91 | LAHAULI | 96 | MARING | 101 | PARJI (DURUA) |
| 82 | BISHNUPRIYA MANIPURI | 87 | KANNADA | 92 | MAITHILI | 97 | MONPA | 102 | PHOM |
| 83 | CAR NICOBARESE (PŨ) | 88 | KHASI | 93 | MALAYALAM | 98 | MUNDA | 103 | PUNJABI |
| 84 | DOGRI | 89 | KONKANI | 94 | MALTO | 99 | NANCOWRY (MÖÜT) | 104 | TELUGU |

### PRIMER DEVELOPMENT IN PROGRESS (18)

| SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language | SN | Language |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 105 | BALTI | 109 | HINDI | 113 | PAITE | 117 | SINDHI | 121 | ZEME (ZEMI) |
| 106 | CHOKRI | 110 | KASHMIRI | 114 | SANGTAM | 118 | THADOU-KUKI | 122 | ZOU |
| 107 | GANGTE | 111 | KOKBOROK (TRIPURI) | 115 | SANSKRIT | 119 | URDU | | |
| 108 | GONDI-TELUGU | 112 | LAI (PAWI) | 116 | SANTALI (JHARKHAND) | 120 | VAIPHEI | | |


भारतीय भाषा संस्थान
**Central Institute of Indian Languages**
(Ministry of Education, Department of Higher Education)
Govt. of India, Manasagangotri, Mysuru - 570 006
+91-821-2515820 (Director) / ada-ciilmys@gov.in

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
**National Council of Educational Research and Training**
Sri Aurobindo Marg
New Delhi-110016
011 2696 2580 / dceta.ncert@nic.in